रही कीन सधे, हीअ दासी दरिसन रे,
तिखो तीरु इश्क जो, वियो लुअं मों लंघे,
सामी चितु चातरिक जां, सुंवाती बूंद मंगे,
अचे रंगि रंगे, दरिसनु डेई पांहिंजो.

परमेश्वर से अनन्य प्रेम करने वाली स्त्री के मन की दशा का वर्णन उसी के शब्दों में सुनिए- ''हे प्रभु! तुम्हारी यह दासी तुम्हारे दर्शन बिना अब रह नहीं सकती। तुम्हारे प्रेम का ऐसा तीक्षा (पैना) तीर लगा है, जो मेरे रोम-रोम को छेद कर पार हो गया है। मेरा प्यासा हृदय चातक पंछी की तरह स्वाति नक्षत्र की वर्षा की एक बूँद के लिए तरस रहा है। हे प्रिय! तुम जल्दी आओ और दर्शन देकर मुझे अपने प्रेम के रंग में रंग दो।

परमेश्वर के प्रति प्रगाढ़ प्रेम भक्ति है। यह भक्ति 'परम प्रेम-रूपा' है, 'अमृत स्वरूपा' है। अर्थात् प्रेम भाव में उत्कटता और मधुरता समायी हुई है। भक्ति का प्रमुख भाव प्रेम ही है। प्रेम रहित भक्ति नहीं हो सकती। जैसे गुड़ में उसकी मिठास समायी हुई होती है, दोनों एकरूप होते हैं, उसी प्रकार भक्ति में प्रेम-भाव समाया हुआ होता है। लौकिक स्तर पर भी यह प्रेम एक दूसरे को बाँधे रखने वाला होता है। प्रेम बिना जीवन शुष्क है, सूना है। अलोकिक स्तर पर भी यह प्रेम भाव अपना विशेष महत्व रखता है। कोई भी मनुष्य या भक्त किसी भी प्रकार से जब परमेश्वर से अपना संबंध स्थापित करता है, तब सबसे पहले अपने मन में प्रेम भाव ही लाता है। भक्ति के जो नौ प्रकार गिनाये गये हैं, उन में माधुर्य भाव वाली भक्ति भी प्रेम-भाव पर ही टिकी हुई रहती है। इसमें भक्त स्वयं को स्त्री कल्पित करते हुए और परमेश्वर को अपना प्रिय पति मानकर भक्ति करता है। इसे 'मधुरा भक्ति' कहा गया है। इस प्रकार 'कांता-आसक्ति' अथवा पति-पत्नी के प्रेम भाव को ईश्वर की अनुभूति करने के लिए आवश्यक माना गया है। भारतीय भाषाओं के असंख्य कवियों ने माधुर्य भाव की कविता लिखकर साहित्य-संसार को मधुर बना दिया है। कबीर और मीराबाई की कविता इस दृष्टि से महत्वपूर्ण है। मीराबाई के काव्य में प्रभु के प्रेम दर्द दिखाई देता है। श्रीकृष्ण के दर्शन की प्यासी मीराबाई कहती है,

पिय रो पंथ निहारतां, सब रैण विहाणी हो।
ज्यूं चातक घन कूँ रटै, मछरी ज्यूं पाणी हो।
मीरा व्याकुल विरहणी, सुध-बुध विसराणी हो।।

■